Dated 24/9/2020 Thrusday

B.A Part-2 (H) Philosophy

डा० अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौल

जॉन लॉक के द्रव्य संबंधी सिद्धांत की विवेचना करें:

जॉन लॉक के अनुसार द्रव्य अनुमेय है, प्रत्यक्षगम्य नहीं। विश्व में अनेक द्रव्य हैं, परन्तु सभी संज्ञा मात्र हैं तथा सरल प्रत्ययों के योग हैं अर्थात द्रव्य मिश्र प्रत्यय हैं जिनकी उत्पत्ति तीन सरल प्रत्ययों (मूल गुण, उपगुण तथा निष्क्रिय व सक्रिय शक्ति) के योग से होती है। हम किसी वस्तु को द्रव्य मान लेते हैं क्योंकि उसमें ये तीन प्रत्यय पाये जाते हैं। हमें जड़ द्रव्य के गुणों का स्पष्टतः संवेदन होता है। अतः जड़ द्रव्य या शरीर की सत्ता सिद्ध है। यदि गुणों की अनुभूति होती है तो इसका आधार भी अवश्य ही होना चाहिए। इसी प्रकार हम अपने मन का सोचना, समझना, इच्छा करना इत्यादि गुणों के रूप में स्पष्ट अनुभव करते हैं; अर्थात इन गुणों का हमें स्वसंवेदन प्राप्त होता है। इससे सिद्ध है कि इन गुणों का आधार आध्यात्मिक द्रव्य या आत्मा अवश्य है। जिस प्रकार शरीर-द्रव्य का गुण विस्तार है उसी प्रकार आत्म-द्रव्य का गुण विचार है। विचार और विस्तार का हमें स्पष्ट अनुभव होता है। अतः इनके आधार भी अवश्य हैं। परन्तु जड़ और चेतन के निजी स्वरूप का हमें पता नहीं, हम केवल गुणों को जानते हैं। इसी प्रकार लॉक ईश्वर की भी सत्ता सिद्ध करते हैं। ईश्वर परम पुरुष है वह मानवीय ज्ञान, अनन्त सुख आदि से सम्पन्न परम पुरुष हैं। लॉक के अनुसार (i) गुणों के आधार का नाम ही द्रव्य है। द्रव्य की सत्ता हम देखते नहीं, वरन मान लेते हैं कि गुण निराधार नहीं रह सकते, अतः इनका आधार द्रव्य अवश्य है। (ii) इनका कहना है कि 'द्रव्य क्या है' मैं नहीं जानता, परन्तु अनुमान से सिद्ध होता है कि इसकी सत्ता है। (iii) परन्तु लॉक द्रव्य की सत्ता को बोधगम्य न मानकर 'अज्ञेय' मानते हैं। (iv) द्रव्य तो एक नाम या संज्ञा है। वस्तुतः गुणों के आधार को हम द्रव्य संज्ञा प्रदान कर देते हैं। हम मान लेते हैं कि द्रव्य है। यह तो एक मान्यता है। (v) लॉक द्रव्य के तीन प्रकार बतलाते हैं - भौतिक (जड़) आध्यात्मिक (आत्मा) और ईश्वर (द्रव्य)